Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 12, Issue No. 2, January-2017, ISSN 2230-7540

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं का योगदान – एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

Sangeeta*

Research Scholar, SSSUTMS University, Madhya Pradesh

----------X----------

प्रस्तावना :–

भारतीय स्वतंत्रता–आन्दोलन का इतिहास स्वतंत्रता के लिए भारतीयों के संघर्ष की अदभुत गाथा है। इस संघर्ष में पुरूषों और महिलाओं ने समान रूप से भाग लिया। भारतीय महिलाओं का योगदान इसमें इसलिए भी महत्वपूर्ण हो जाता है कि उनका सामाजिक उत्थान हुए बहुत लंबा समय व्यतीत नहीं हुआ था। घर का मोर्चा हो या राजनीति का रणक्षेत्र, महिलाओं ने जिस साहस, सहिष्णुता और वीरता से स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी भूमिका निभाई, वह इतिहास की धरोहर है। सन् 1857 का विद्रोह भारतीय स्वतत्रत्रता संग्राम का पहला ऐसा विस्फोट था, जिसकी नायक एक महिला थी, जिसने अद्भुत वीरता, पराक्रम और दिलेरी का परिचय दिया। उसके लिये स्वयं अंग्रेज शासक भी प्रशंसा किये बगैर नही रह सके। सर हयूरोज को झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के अद्भुत पराक्रम से चकित होकर कहना पड़ा कि ''सैनिक विद्रोह के नेताओं में महारानी लक्ष्मीबाई सर्वाधिक बहादुर और सर्वश्रेष्ठ थीं।'' रामगढ़ की रानी ने जहाँ रणक्षेत्र में लड़ते–लड़ते प्राण दे दिये वहीं बेगम हजरत महल अंग्रेजों के समक्ष आत्म समर्पण कर अपमानित होने के बजाए नेपाल की ओर चल पड़ी, जहाँ वनवास में उनकी मृत्यु हुई और जीनत महल को बर्मा में निर्वासित कैदी के रूप में जीवन व्यतीत करना पड़ा।

भारतीय राष्ट्रीय कॉग्रेस की 1885 में स्थापना ने महिलाओं को एक राजनीतिक मंच प्रदान किया। इसकी स्थापना के कुछ वर्षों बाद कॉग्रेस के वार्षिक अधिवेशनों में भारतीय महिलाएं प्रतिनिधि के रूप में भाग लेने के लिए आने लगीं। 1890 के कलकत्ता अधिवेशन में स्वर्ण कुमारी देवी और श्रीमती कादम्बिनी गांगुली ने भाग लिया। श्रीमती गांगुली प्रथम महिला थीं जिन्होनें राष्ट्रीय कॉग्रेस के मंच से अपना पहला भाषण दिया। यह सम्भवतया भारतीय महिलाओं के राष्ट्रीय आन्दोलन में प्रवेश का शुभारम्भ था और इसके बाद तो मातृभूमि की खातिर राजनैतिक गतिविधियों में भाग लेने वाली महिलाओं की संख्या लगातार बढ़ती ही चली गयी।

इन महिलाओं को उत्साहित कर एवं उन्हे संगठित कर एक लक्ष्य दिया महात्मा गांधी ने 1920 में असहयोग आन्दोलन चलाकर। इससे महिलाओं को न केवल एक उद्धेश्य मिला अपितु उन्हे एक नयी दिशा भी मिली। जब 1930 में गांधी जी ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन चलाया, तो बड़ी संख्या में महिलाओं ने सत्याग्रह में भाग लेकर अपनी शक्ति का परिचय दिया। स्व देशी प्रचार के पक्ष में वातावरण बनाने के लिये विदेशी वस्त्रों की होली जलाई जाने लगी। शराब की दुकानें धरना देकर बंद कराई जाने लगी। उसी तरह 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में तो हजारों की संख्या में महिलाएँ घरों से बाहर निकल आई। उन्होंने तन–मन से इस आन्दोलन में सहयोग दिया। संगठित रूप से कर्तव्य के प्रति समर्पित होकर और अनेक यातनाओं को सहते हुए उस समय राजनीतिक गतिविधियों की बागडोर सम्भाली जब अधिकांश राष्ट्रीय नेताओं को ब्रिटिश सरकार ने सींखचों में जकड़कर रखा था। उस समय राष्ट्रीय स्तर पर श्रीमती सरोजनी नायडू, अरूणा आसिफ अली, श्रीमती सुचेना कृपलानी, कमला देवी चटोपाध्याय, कस्तूरबा गांधी, विजय लक्ष्मी पंडित, मुत्तुलक्ष्मी रेड्डी, एनी बेसेंट, हन्सा मेहता तथा राजकुमारी अमृता कौर जैसी अनेक महिलाओं को योगदान को इतिहास कभी विस्मृत नहीं कर पायेगा।

साहित्य की समीक्षा

राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं की भागीदारी को तीन प्रमुख स्तरों पर इंगित किया जा सकता है। प्रथम–वे सामान्य महिलायें जिन्होंने सत्याग्रह में हिस्सा लिया, किन्तु जो किसी भी राजनीतिक अथवा सामाजिक संगठन से औपचारिक रूप से संबंधित नहीं थी। द्वितीय–वे महिलायें जो गांधीवादी राजनीति से प्रभावित होकर समाज सुधार के उद्देश्य से सक्रिय हुई, किन्तु इनकी भागीदारी कार्य एवं क्षेत्र की दृष्टि से सीमित थी। तृतीय–वे कुलीन महिलायें जिनके परिवार राष्ट्रीय आन्दोलन से प्रतिबद्ध थे एवं इसके कारण ऐसी महिलाओं का सार्वजनिक राजनीति में प्रवेश तथा भूमिका सरल एवं स्वाभाविक मानी गयी। भारत में महिला स्वतंत्रता आन्दोलन राष्ट्रीय आन्दोलन की राजनीति का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है।

महिला मुद्दों का राष्ट्रीय आन्दोलन में समावेश होने से कांग्रेस के कई नेताओं में महिलाओं को समान अधिकार मिलने के विषय पर जागरूकता पैदा करने में मदद की। सार्वजनिक जीवन में कर्य करने से महिलाओं को एक नया आत्मविश्वास प्राप्त हुआ।

1920 में असहयोग आंदोलन चला जिससे महिलाओं को एक नई दिशा मिली। 1930 में गांधी जी के रचनात्मक कार्यक्रम सविनय अवज्ञा आंदोलन तथा भारत छोड़ो आंदोलन में भी महिलाओं ने तन–मन–धन से पूर्ण सहयोग दिया। तथा अनेक यातनाओं को सहते हुए उस समय राजनीतिक आंदोलन की बागडोर संभाली जब हजारों राष्ट्रीय नेताओं को ब्रिटिश सरकार ने कारावास में बंद कर रखा था। जिस समय सम्पूर्ण राष्ट्र स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रवाह में बह रहा था, म्ध्यप्रदेश उससे कैसे अछूता रहता? इस

www.ignited.in

क्षेत्र की महिलाओं ने भी राजनैतिक आन्दोलन में अपना सक्रिय योगदान दिया। राष्ट्रीय आन्दोलन के समय इन महिलाओं ने खादी का प्रचार, विदेशी वस्त्रों की होली जलाना, मद्य निषेध, शराब की दुकानों पर धरना देना तथा पिकेटिंग करना आदि कार्यों में भाग लिया।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि स्वाधीनता आंदोलन के साथ–साथ नेताओं ने महिला उत्थान की दिशा में अपना योगदान दिया। उनके प्रयत्नों से महिलाओं में शिक्षा के विकास के साथ–साथ जागृति आती गई तथा घर की चारदीवारी से बाहर निकलकर उन्होने राजनीतिक, सामाजिक तथा सार्वजनिक गतिविधियों में भाग लेना प्रारंभ किया। ब्रिटिश सरकार ने भी महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने के लिए अनेक कानून बनाए परिणामस्वरूप धीरे–धीरे समाज में महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन आना प्रारंभ हुआ जो राष्ट्रीय आन्दोलन के समय व्यापक रूप से दिखाई पड़ा।

1920 में गांधी जी के संम्पर्क में आने के पश्चात् तथा उनके नेतृत्व में चले राष्ट्रीय आन्दोलनों के फलस्वरूप म्ध्यप्रदेश में महिला सशक्तिकरण मूर्त रूप लेने लगा। इस प्रकार महिला सशक्तिकरण की दिशा में आधुनिक काल में हुए सामाजिक परिवर्तनों की प्रमुख भूमिका रही।

राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं का योगदान:-

अरूणा आसफ अली :– 9 अगस्त को ग्वालियर टैंक पर होने वाली जनसभा में जब सभी महत्वपूर्ण नेता गिरफ्तार कर लिए गए तब उत्साही महिला अरूणा आसफ ने झंडा फहराया।

अरूणा आसफ अली :– ऊषा मेहता ने अपने सहकर्मियों के साथ भूमिगत रेडियो प्रसारण करके इतिहास बनाया।

भी का जी कॉमा :– भीका जी कॉमा ने 1907 में स्त्तगरी में सम्पन्न इंटरनेशनल सोशलिस्ट कांग्रेस में भारत का प्रतिनिधित्व किया, आजाद हिंद फौज में कल्पना दत्त, प्रीती लता वाडेकर, शांति घोष, सुनीता चौधरी, बीना दास ने भी ब्रिटिश शासन का विरोध करने में अपना योगदान दिया।

सत्यवती का जन्म 1906 में हुआ था, सत्यवती ने सर्वमन कमिशन के विरोध में महिलाओं के आन्दोलन का नेतृत्व किया। जुलूस का नेतृत्व करती हुई मजिस्ट्रेट कार्यालय कश्मीरी गेट के पास पहुँच गई।

सत्यवती की माँ वेद कुमारी व उनकी बहनें उषा और कौशल्या ने भी इस आन्दोलन में भाग लिया।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का पहला अधिवेशन – बंग–भंग विरोधी आन्दोलन में सहयोगी महिलायें

कितूर की रानी चेनम्मा :– कितुर की रानी चेनम्मा ने 23 अक्टूबर 1824 में सबसे बड़ी शक्ति को ललकारा था, इसलिये दक्षिण भारत में यह दिन रानी चेनम्मा की याद में महिला दिवस के रूप में मनाया जाता है।

महारानी लक्ष्मीबाई :– महारानी लक्ष्मीबाई के पिता का नाम मोरोपंत था, लक्ष्मीबाई का विवाह राव गंगाधर से हुआ था।

माता तपस्वनी :– माता तपस्वनी (रानी खुनंदा) लक्ष्मीबाई की भतीजी थी जो कि सन्यासी विद्रोह की संचालक थी।

एनो बेसेट :– 1917 में कांग्रेस की प्रथम महिला थी।

सरोजनी नायडू :– 1925 में कांग्रेस की अध्यक्ष थी।

नलिनी सेन गुप्ता :– 1933 में कांग्रेस की अध्यक्ष थी।

पश्चिमी भारत से :– स्वतंत्रता संग्राम में हंसा मेहुता, मिथुबन प्रतीत, अवंतिका बाई गोबल और प्रेमबाई थे।

उत्तर भारत से :– स्वरूप रानी नेहरू, पार्वती देवी (उनकी तीन पुत्रियाँ – मनमोहिनी, जानकी, सत्यवती देवी)

दक्षिण भारत से :– एस. अम्बुपायल, रूक्मणी, लक्ष्मीपति दुर्गाबाई

पूर्वी भारत से :– बसंती, उर्मिला देवी, सरला देवी, मालती चौधरी 1930–32 के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में महिलाओं की भागीदारी 20वीं सदी के प्रारंभिक वर्षों की तुलना में ज्यादा थी। 1940 में जब गाँधीजी अपने व्यक्तिगत सत्यागृह कार्यक्रम का शुभारंभ किया तो सुचेता कृपलानी उसमें शामिल होने वाली पहली महिला थी।

कस्तुरबा गाँधी ने आजादी के संघर्ष में खुलकर भाग लिया वे कांग्रेस में (गुजरात प्रदेश) की अध्यक्ष रही।

मनमोहिनी सम्गल ने पंजाब की ग्रामीण महिलाओं को स्वतंत्रता आन्दोलनों में भाग लेने की प्रेरणा दी थी।

रूक्मणी लक्ष्मीपति मद्रास की प्रथम महिला थी जिन्हें नमक आन्दोलन के दौरान गिरफ्तार किया गया था।

पद्मावती होलकर और सत्यामायी ने मध्यप्रदेश में महिलाओं को संगठित कर खादी का प्रचार किया।

शांति घोस व सुनीति चौधरी ने 15 वर्ष की आयु में त्रिपुरा का जिला मजिस्ट्रेट स्टीवेंस को हैडक्वाटर में घुसकर गोलियों से मारा था।

प्रीति लता वोछार का जन्म 1911 में हुआ था इनके पिता जगत बंधू वोछार थे प्रीति लता वोछार इंडियन रिपब्लिकन आर्मी की सक्रीय सदस्य बन गई इन्होंने 1932 में यूरोपियन क्लब पर हमला कर शहीद हो गई।

मैडम भीखा जी कामा का जनम पारसी परिवार में हुआ था यह पहली महिला थी जिन्हें विदेश में जाकर भारतीय ध्वज को फहराने का मौका मिला था। लन्दन में अश्त्र सस्त्र के निर्माण व उन्हें भारत भेजने और उनकी देख–रेख की जिम्मेदारी भी इन्हीं की थी।

माता गिनी हाजरा को बुड़ी गाँधी के नाम से संबोधित किया जाता था।

सरोजनी नायडू ने गाँधीजी के साथ दांडी यात्रा पर पैदल चली, अखिल भारतीय महिला सम्मेलन की अध्यन रही तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद उत्तर प्रदेश के राज्यपाल के पद पर रही। 1905 में बंग भंग के विरोध में लगभग 5000 महिलाओं के साथ भाग लिया एवं घर–घर जाकर महिलओं में स्वदेशी प्रचार–प्रसार किया। खादी बेचीं शराब की दुकानों पर धरने दिए, इनमें मणी बैन, पटेल उर्मिला दास, राजकुमारी अमृतकार ने बड़चड़कर भाग लया।

उपसंहारः–

मनुष्य जाति की सृष्टि में महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान ही नहीं है, अपितु समाज निर्माण में उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। अपनी लघुता में भी महानता, शीतलता में भी जीवन की उष्णता तथा सुन्दरतन में भी शिवम् बनी रहने वाली महिला समाज के लिये हमेशा प्रेरक तत्व बनी रही है। वह सदा पुरूष की प्रेरक शक्ति रही हैं। सृष्टि के आरम्भ से ही उसने सामाजिक जीवन के पोषण में ममता, वात्सल्य, त्याग, करूणा, कोमलता एवं मधुरता से अपूर्व योगदान दिया ळें

इतिहास साक्षी है कि पुरूष ने जीवन में प्रगति पथ पर अग्रसर होने के लिए मां, बहन, पत्नी और प्रेयसी आदि किसी न किसी रूप में महिला ने सहायता एवं प्रेरणा प्राप्त की है। प्रकृति ने उसे सुकुमार ही नहीं बनाया वरन् उसे मनुष्य की जननी का पद देकर उसके हृदय में अधिक संवेदना, आंखों में अधिक आर्द्रता तथा स्वभाव में अधिक कोमलता भर दी है। वह हर स्वरूप में कोमलता, भावुकता और ममता की मूर्ति बनी रही। उसे सामाजिक परिस्थितियों में परिवर्तन के साथ–साथ भिन्न–भिन्न स्थितियों से निपटना पड़ा। कभी वह पूजी गयी तो कभी बंधनों एवं निषेधों की जंजीरों से उसे जकड़ दिया गया। उसके अधिकारों का युगों–युगों तक हनन होता गया। कहा जाता है कि किसी समय पुरूष ने अपने को महिला से श्रेष्ठ कहा और महिला ने उसे मान लिया और यही युगों से चला आ रहा है। तथा कथित रूप से पिछड़े हुए इस क्षेत्र की महिलाओं की भूमिका स्वाधीनता आन्दोलन में अति महत्वपूर्ण थी क्योंकि उन्नत क्षेत्र की महिलाओं की अपेक्षा पिछड़े हुए क्षेत्र की महिलाओं का स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लेना या स्वाधीनता आन्दोलन में भाग ले रहे अपने परिवार के पुरूष सदस्यों को पूर्ण सहयोग देना निश्चित ही एक उल्लेखनीय उपलब्धि मानी जायेगी। निःसंदेह स्वाधीनता आन्दोलन में म्ध्यप्रदेश की महिलाओं का योगदान एवं उनका प्रभाव सराहनीय माना जायेगा और यह कहा जा सकेगा कि इस अंचल की महिलाओं ने पुरूषों की बराबरी कर नारी जागरण को और स्वाधीनता आन्दोलन को सार्थक कर दिखाया।

शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएं जिस प्रकार एकजुट होकर प्रभात फेरी निकालती थी तथा चरखा चलाकर अपने परिवार का पोषण करती थीं उससे महिला सशक्तिकरण की धारणा बलवती होती है। इतना ही नहीं जंगल सत्याग्रह तथा विदेशी वस्त्रों की दुकानों के समक्ष धरना देते हुए जिस प्रकार वे पुलिस प्रताड़ना को सहती रही तथा जेल जाकर भी जिनकी हिम्मत कम नहीं हुई, ये सब इस तथ्य को इंगित करते हैं कि म्ध्यप्रदेश की महिलाएं अन्य क्षेत्रों की महिलाओं की तुलना में कम जागरूक नहीं थी। गांधी जी के म्ध्यप्रदेश आगमन के समय यहां की महिलाओं ने तिलक स्वराज फंड तथा हरिजनोद्धार के लिए जिस उदारता से आभूषणों का दान दिया, असहयोग आंदोलन के दौरान शहरी महिलाओं ने गांधी जी से प्रेरित होकर अपने विदेशी वस्त्रों का जिस प्रकार त्याग किया, धरना देते समय और जेलों में रहकर उन्होंने जिस वीरता और साहस का परिचय दिया तथा अपने पतियों के जेलों में बंद रहने की अवधि में उन्होंने जिस सहनशीलता और हिम्मत के साथ अपने परिवार का पालन पोषण किया ये सब निःसंदेह यहां की महिलाओं के उत्थान के ज्वलंत प्रमाण कहे जा सकते हैं।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि म्ध्यप्रदेश सहित भारतीय महिलाओं के उत्थान में महात्मा गांधी का योगदान आधुनिक भारतीय इतिहास की एक गौरवशाली गाथा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

बी.पी. शर्मा, कार्यालय समितियों के पंजीयन रजिस्टर में पंजीकृतनुसार व्यवस्थापक, आर्य समाज बैजनाथपारा, रायपुर द्वारा प्रदत्त जानकारी, दिनांक 06.02.2007 एवं 05.12.2010

साक्षात्कार : केयूर भूषण, पूर्व सांसद एवं स्वतंत्रता संग्राम सेनानी सुन्दर नगर, रायपुर, दिनांक 09.10.2009

भगवदाचार्य ''भारत पराजित की प्रस्तावना'', नवजीवन प्रेस, अहमदाबाद, 2008

आचार्य संजय शास्त्री साक्षात्कार : छत्तीसगढ़ आर्य प्रतिनिधि सभा दुर्ग, दिनांक 15. 08.2010

आर्य कमल नारायण साक्षात्कार : वेदचार्य एवं सदस्य आर्य प्रतिनिधि सभा, छत्तीसगढ़', स्थान, दीनदयाल उपाध्याय नगर, रायपुर, दिनांक 16.07.2010

वेदव्रत, आर्य, साक्षात्कार : कोषाध्यक्ष आर्य समाज, सक्ति जिला जांजगीर, दिनांक 05. 02.2011

आचार्य दयासागर, साक्षात्कार : प्रधान छत्तीसगढ़, प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दुर्ग दिनांक 15.08.2010

भार्गव उर्मिला, भार्गव उषा ''शिक्षा सिद्धांत एवं शिक्षण'' अमित प्रकाशन, आगरा, 2005

समाचार पत्र 'नवभारत', रायपुर, दयानंद सरस्वती जयंती विशेषताएँ, 2011

श्री आर्य (सपत्निक), साक्षात्कार वरिष्ट स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी दिनांक 21 दिसम्बर, 2011 पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

Corresponding Author

Sangeeta*

Research Scholar, SSSUTMS University, Madhya Pradesh

E-Mail – chintuman2004@gmail.com